नवम्बर: 2024 वर्ष : 8 अंक : 2

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से,

संस्थान का मासिक समाचार, नवंबर 2024 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का नवम्बर 2024 अंक आप सभी को दीपावली और गुरु नानक जयंती की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ प्रस्तुत है।

दीपावली दीपों का पर्व है। यह त्योहार हमें यह संदेश देता है कि जिस प्रकार दीपों की लड़ी घने अंधकार को ख़त्म करती है उसी प्रकार हम अपने जीवन संघर्ष को विवेक और ज्ञानरूपी प्रकाश से गौरवान्वित कर सकते हैं। शरद काल और कार्तिक मास में मनाई जाने वाली त्योहारों में दीपावली और गुरु पूर्णिमा का विशेष महत्व है। गुरु पूर्णिमा अर्थात सिक्खों के प्रथम गुरु, नानक देव जी का जन्म दिवस।

प्रस्तुत अंक में संस्थान में अक्टूबर माह के हुये कार्यकलापों को दिखाया गया है।

अंत में, आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

सुश्री प्रियंका बसु इंग्टी, सचिव (मत्स्य पालन), हिमाचल प्रदेश का आईसीएआर-सीआईएफआरआई का दौरा

हिमाचल प्रदेश सरकार की सचिव, श्रम एवं रोजगार, मुद्रण एवं लेखन सामग्री, मत्स्य पालन और युवा सेवा एवं खेल, सुश्री प्रियंका बसु इंग्टी (आईएएस) ने हिमाचल प्रदेश राज्य में सतत अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास के लिए आवश्यक उपयुक्त प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए 3 अक्टूबर 2024 को आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर का दौरा किया। उन्होंने राज्य में मत्स्य पालन की वर्तमान स्थिति के बारे में बताया और गोविंदसागर और पौंग जलाशय पर विशेष ध्यान देने के साथ बाड़े और पेन प्रौद्योगिकीयों को अपनाने में आईसीएआर-सीआईएफआरआई से सलाह मांगी, जीवित मछली परिवहन के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी में रुचि दिखाई। आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने अपने ब्रीफिंग में मछली जैव-विविधता, संरक्षण, पिंजरे और पेन-कल्चर तकनीक, क्षमता निर्माण और अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के आजीविका विकास की दिशा में आईसीएआर-सीआईएफआरआई की प्रमुख शोध उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने राज्य के अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन क्षेत्रों में आवश्यक विशिष्ट तकनीकी हस्तक्षेपों पर चर्चा की। सचिव ने आईसीएआर-सीआईएफआरआई की विभिन्न सुविधाओं का भी दौरा किया जिसमें

फीड प्रयोगशाला, जीआईएस प्रयोगशाला, हिलसा अनुसंधान सुविधाएं, आईसीपी-एमएस और जीसी-एमएस/एमएस सुविधा, जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला और विभिन्न अन्य सुविधाएं शामिल हैं। सचिव ने देश के अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन क्षेत्र की उत्पादकता और स्थिरता को बढ़ाने की दिशा में आईसीएआर-सिफरी के अनुसंधान आउटपुट की सराहना की।

मछली किसानों के कौशल में सुधार के लिए कार्यक्रम

बैरकपुर में आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई) ने पटना जिले, बिहार के 30 मछली किसानों के कौशल और दक्षता में सुधार के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 26 सितंबर से 02 अक्टूबर 2024 तक सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य स्थायी मछली उत्पादन और आजीविका को बढ़ावा देने के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं की उनकी समझ को गहरा करना था। बातचीत के दौरान संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने प्रतिभागियों को स्थायी प्रथाओं को सुनिश्चित करने के लिए अपने ज्ञान का विस्तार करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने किसानों से उत्पादकता बढ़ाने के लिए अन्तर्स्थलीय जल संसाधनों की क्षमता का पता लगाने के लिए वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि को लागू करने का आग्रह किया। प्रशिक्षण में जल गुणवत्ता प्रबंधन, नर्सरी पालन और तालाबों का निर्माण और प्रबंधन, आजीविका बढ़ाने के लिए बाड़े में पालन, प्रेरित प्रजनन, हैचरी प्रबंधन, जीवित मछली बीज का परिवहन, सजावटी मछली पालन, और विभिन्न पालन प्रणालियों के आर्थिक विश्लेषण पर सत्र शामिल थे। प्रतिभागियों को मछली आहार प्रबंधन और रोग नियंत्रण पर व्याख्यान भी दिए गए, साथ ही अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अवलोकन भी किया गया। कार्यक्रम में रीसर्कुलेटिंग एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), सजावटी हैचरी इकाई, गंगा मछली संरक्षण इकाई और एक मछली चारा मिल जैसी सुविधाओं का दौरा भी शामिल था। व्यावहारिक कौशल को और मजबूत करने के लिए, प्रशिक्षुओं ने हलिसहर मछली फार्म, गालिब स्ट्रीट सजावटी मछली बाजार, आईसीएआर-सीआईएफई कोलकाता केंद्र, आईसीएआर-सीआईएफए कल्याणी केंद्र और पूर्वी कोलकाता वेटलैंड का दौरा किया। सभी मछुआरों ने महात्मा गांधी की 155वीं जयंती के उपलक्ष्य में “स्वच्छता ही सेवा” कार्यक्रम में भाग लिया। प्रशिक्षण के समापन पर, प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्राप्त हुए और उन्होंने क्षमता निर्माण के अनुभव से अत्यधिक संतुष्टि व्यक्त की। आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. अजय साहा और डॉ. कैनसियाल जॉनसन ने श्री सुजीत चौधरी, श्री मानबेंद्र रॉय, श्री कौशिक मंडल और डॉ. अविषेक साहा के तकनीकी सहयोग से किया।

ब्रह्मपुत्र नदी : मत्स्य-पालन और पारिस्थितिकी-तंत्र का सर्वेक्षण

आईसीएआर-सीआईएफआरआई क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मियों ने असम में सदिया से धुबरी तक ब्रह्मपुत्र नदी के पूरे हिस्से का सर्वेक्षण किया। नदी की मछली विविधता, पकड़ संरचना और पारिस्थितिकी (मिट्टी और पानी की गुणवत्ता) का दस्तावेजीकरण करने के लिए सितंबर महीने में ये सर्वेक्षण किया गया। ब्रह्मपुत्र नदी, जो पूरे असम राज्य में बहती है, इस क्षेत्र में मत्स्य पालन की जीवन रेखा है। कुल 10 सैंपलिंग स्टेशन सादिया, गुइजान घाट (तिनसुकिया), डिब्रूगढ़, जोरहाट, बिश्वनाथ घाट, तेजपुर, उजानबाजार (गुवाहाटी), गोलपारा, जोगीघोपा, और धुबरी का सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण टीम में डॉ. बि. के. भट्टाचार्य, डॉ. ए.के. यादव, डॉ. सिमंकु बोरा, श्री राकेश कुमार, श्री बी.सी. रे और श्री अमूल्य काकाती शामिल थे। इस सर्वेक्षण में पाया गया कि कैबडियो मोरार, एक छोटी देशी साइप्रिनिड मछली है जो नदी के पूरे हिस्से में मछली-पकड़ में सबसे आगे है। नदी के निचले हिस्से में, विशेष रूप से गुवाहाटी और गोलपारा में अत्यधिक बेशकीमती प्रवासी हिल्सा को पकड़ा गया। यह देखा गया कि तुलनात्मक रूप से उच्च मैलापन को छोड़कर, अधिकांश जल गुणवत्ता पैरामीटर मत्स्य पालन के लिए अनुकूल श्रेणी में थे। ब्रह्मपुत्र नदी के

'राष्ट्रीय डॉल्फिन दिवस' का आयोजन

डॉल्फिन, विभिन्न जलीय आवासों में शीर्ष पारिस्थितिक संकेतक प्रजातियों में से एक हैं। नतीजतन, डॉल्फिन प्रजातियों के निरंतर संरक्षण और अस्तित्व के लिए मनुष्यों की भागीदारी की भी जरुरत रहती है क्यूँकि वे अपनी नियमित जरूरतों के लिए जलीय पर्यावरण पर निर्भर हैं। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 15 अगस्त, 2020 को "प्रोजेक्ट डॉल्फिन" का शुभारंभ किया, जिसका उद्देश्य नदी और समुद्री दोनों डॉल्फ़िन को इसके संरक्षण प्रयासों में शामिल करना था। पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव जी ने डॉल्फिन संरक्षण के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने के लिए 5 अक्टूबर को "राष्ट्रीय डॉल्फ़िन दिवस" घोषित किया। इस दिन को उल्लेखनीय बनाने के लिए, आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत हुगली नदी के तट पर दासपारा घाट और शेराफुली घाट पर 5 अक्टूबर, 2024 को 'राष्ट्रीय डॉल्फिन दिवस' मनाया। यह विशेष दिन इन खूबसूरत प्रजातियों और उनके पारिस्थितिक तंत्रों की रक्षा के उद्देश्य से संरक्षण प्रयासों के महत्व पर प्रकाश डालता है जो प्रदूषण, बांध निर्माण, और जलवायु परिवर्तन के कारण खतरे में हैं। इस अवसर पर सक्रिय मछुआरों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और नदी के किनारे रहने वाले छात्रों सहित 100 से अधिक कर्मियों ने भाग लिया और जागरूक हुए। एनएमसीजी परियोजना के प्रधान अन्वेषक और आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास ने अपने संदेश में याद दिलाया कि भारतीय जल

में नदीय डॉल्फ़िन सहित समुद्री स्तनधारियों की तीस से अधिक विशिष्ट प्रजातियाँ पाई जाती हैं। केवल गंगा-ब्रह्मपुत्र प्रणालियाँ ही गंगा नदी डॉल्फ़िन (प्लैटनिस्टा गैंगेटिका) का घर हैं। इसके अलावा, उन्होंने गंगा पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक संकेतक प्रजाति के रूप में गंगा डॉल्फिन के महत्व को रेखांकित किया क्योंकि पानी की गुणवत्ता और प्रवाह में उतार-चढ़ाव के प्रति डॉल्फिन की संवेदनशीलता पारिस्थितिकी

तंत्र और इसकी घटक प्रजातियों की सामान्य जीवन के बारे में जानकारी उत्पन्न करती है। भारत में डॉल्फिन के सामने आने वाली कई चुनौतियों को देखते हुए यह जरूरी है कि उनके बारे में जानकारी फैलाई जाए। जागरूकता बढ़ाने और संवेदीकरण कार्यक्रम की बदौलत समुदाय अब विभिन्न नदी संरक्षण उपायों के बारे में जागरूक है। हाल ही में स्थापित "राष्ट्रीय डॉल्फिन दिवस" का घोषित लक्ष्य यही है। इस कार्यक्रम को NMCG घटक III से जुड़े सभी वैज्ञानिकों और शोध विद्वानों द्वारा समर्थित किया गया था जिसका समग्र पर्यवेक्षण सिफरी के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास ने किया था। इसके अलावा, सिफरी ने बैरकपुर, फाल्टा, बालागढ़, फरक्का (पश्चिम बंगाल); भागलपुर (बिहार); और प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जिसमें 250 से अधिक मछुआरे शामिल हुए। इंटरैक्टिव सत्र के दौरान, वैज्ञानिकों और अधिकारियों ने मछली पालन और मछली स्वास्थ्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए प्रश्नों का उत्तर दिया। सिफरी आर्गक्योर (100 मिली/नग) लगभग 50 आदिवासी मछुआरों (जिनमें 22 अन्य मछुआरे शामिल हैं) के बीच वितरित किया गया। कामरूप (आर) के एफडी श्री गौतम मेधी ने औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया और राज्य के मछली किसानों को उनके समर्थन के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई की सराहना की।

"कामरूप (आर), असम के मछली किसानों के बीच CIFRI-ARGCURE का लोकप्रियकरण

CIFRI ARGCURE-मछली पालन में आर्गुलोसिस रोग को नियंत्रित करने के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा विकसित एक उत्पाद है। असम के मछली किसानों के बीच उत्पाद को लोकप्रिय बनाने के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने मत्स्य विभाग (DoF), असम सरकार के सहयोग से बोको, कामरूप (आर) जिले में आदिवासी उप-योजना (TSP) कार्यक्रम के तहत 04.10.2024 को 50 आदिवासी मछुआरों के लिए एक "प्रदर्शन-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम" का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर; डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सीआईएफआरआई आरसी, गुवाहाटी और डॉ. पी. बर्मन, डीएफडीओ, कामरूप (आर), डीओएफ, असम सरकारके समग्र मार्गदर्शन में किया गया । इसका समन्वयन डॉ. प्रोनोब दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक (आयोजन सचिव); डॉ. एस. सी. एस. दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक; और श्री सी. पेगु, एफडीओ (सह-आयोजन सचिव) ने किया। कार्यक्रम में 60 प्रतिभागियों (मत्स्य किसान और मत्स्य अधिकारी) ने भाग लिया। सुश्री प्रीतिशा हजारिका, एफडीओ, कामरूप (आर) ने दिन भर के कार्यक्रम के लिए प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और कार्यक्रम का उद्देश्य समझाया। डॉ. प्रोनोब दास ने उद्घाटन भाषण दिया और असम में विशेष जोर के साथ पूर्वोत्तर क्षेत्र में मत्स्य पालन के विकास के लिए संस्थान द्वारा किए गए अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों को रेखांकित किया। उन्होंने किसानों के लाभ के लिए संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न उत्पादों और प्रौद्योगिकियों के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने अर्गुलोसिस रोग की रोकथाम और नियंत्रण उपायों के बारे में चर्चा की डॉ एस. सी. एस. दास ने उत्पादन बढ़ाने के लिए मछली पालन में मछली स्वास्थ्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या की। आईसीएआर-सीआईएफआरआई के एसटीए श्री अमूल्य काकाती ने आर्थिक नुकसान को कम करने के लिए सर्दियों के दौरान मछली पालन के बारे में संक्षेप में बताया। श्री सी. पेगु ने राज्य में मत्स्य पालन के विकास के लिए निरंतर तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई को धन्यवाद दिया। उन्होंने मत्स्य पालन और संबद्ध गतिविधियों के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी। श्रीमती खानश्री बोरो, ग्राम प्रधान, बोंडापारा, बोको, कामरूप (आर) ने आईसीएआर-सीआईएफआरआई और डीओएफ से स्थानीय और साथ ही राज्य में मत्स्य पालन के विकास के लिए मिलकर काम करने का आग्रह किया।

सुंदरबन की महिला मछुआरों सशक्तिकरण

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई) ने कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी के सहयोग से अपने एसटीसी कार्यक्रम के तहत सुंदरबन के कुलतली में इनपुट वितरण और जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस पहल का उद्देश्य हाशिए पर रहने वाली अनुसूचित जाति (एससी) की महिलाओं के लिए स्थायी आजीविका को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम में 100 महिला लाभार्थियों को क्षेत्र में स्थायी मछली पालन करने के लिए 6 किलोग्राम फिंगरलिंग और 100 किलोग्राम मछली का चारा प्रदान किया गया। आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने इस तरह की पहल के माध्यम से वंचित समुदायों को सशक्त बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने सुंदरबन के एक गाँव को बेहतर बुनियादी ढाँचे और बेहतर आजीविका के अवसरों के साथ एक "आधुनिक गाँव" के रूप में विकसित करने की योजना की भी घोषणा की जिसमें विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी के संस्थापक और अध्यक्ष श्री लोकमन मोल्ला ने सीआईएफआरआई के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा, यह सीआईएफआरआई की एक सराहनीय पहल है। उनके सहयोग का इन महिलाओं पर स्थायी प्रभाव पड़ेगा जिससे

इस क्षेत्र में सतत विकास को बढ़ावा मिलेगा। इस कार्यक्रम को सुंदरबन में मछुआरी महिलाओं के उत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जा रहा है, जो उन्हें स्थायी मछली पालन के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए संसाधन प्रदान करता है। सीआईएफआरआई की पहल से इस सुदूर और कमजोर क्षेत्र में दीर्घकालिक सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है, जिससे इसके समुदायों के लिए एक उज्जवल भविष्य में योगदान मिलेगा।

मछली रोग प्रबंधन और फ़ीड अनुप्रयोग के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर जागरूकता कार्यक्रम

अपनी एकीकृत स्मार्ट स्वचालित तकनीक से सटीक कृषि के लिए व्यापक मॉडल निर्माण किया जा रहा है। ड्रोन तकनीक इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह तकनीक जल निकाय स्वास्थ्य स्थिति की सटीक और आवधिक निगरानी, रोगाणु, मछली रोग, मैक्रोफाइट संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशकों का कम और समय रहते छिड़काव और मानव संसाधनों के साथ बड़े मछली फार्म में फ़ीड देने के लिए एक कुशल उपकरण के रूप में कार्य कर सकते है। आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), बैरकपुर के निदेशक के मार्गदर्शन में आईसीएआर एग्री-ड्रोन और एनएसपीएएडी चरण II परियोजना के तहत 3.10.2024 को चरचरिया वेटलैंड, पूर्वी कोलकाता वेटलैंड में मत्स्य पालन में ड्रोन प्रौद्योगिकी की क्षमता को दर्शाने के लिए एक प्रदर्शन सह जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जागरूकता कार्यक्रम में आईसीएआर-सीआईएफआरआई की वैज्ञानिक श्रीमती चायना जाना ने मछली पालन में ड्रोन तकनीक के अनुप्रयोगों और और इनपुट दक्षता के संबंध में किसानों को इससे कैसे लाभ मिल सकता है, इस बारे में चर्चा की। वैज्ञानिक डॉ. विकास कुमार ने मत्स्य पालन में प्रचलित मछली रोगों और इसके प्रबंधन प्रथाओं के बारे में जानकारी दी। ग्लौकस एग्रोकेम प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री सरीफुल इस्लाम ने अपनी कंपनी के बारे में बताया जो वाणिज्यिक मछली पालन के लिए फ़ीड इनपुट, दवा, नई तकनीक आदि

जैसी विभिन्न सेवाएं प्रदान करने के लिए समर्पित है। कार्यक्रम के दौरान आईसीएआर-सीआईएफआरआई के तकनीकी अधिकारी और ड्रोन पायलट श्री कौशिक मंडल ने पूर्वी कोलकाता वेटलैंड के चरचरिया ब्लॉक में जलाशयों के ऊपर ड्रोन उड़ाकर दवा का छिड़काव और मछली को फीड देने की प्रक्रिया को प्रदर्शित किया। मछुआरों ने भी तकनीक के बारे में जानने के लिए सक्रिय रूप से भाग लिया और मछली पालन में इस प्रणाली का उपयोग करने में अपनी रुचि दिखाई। उन्होंने तकनीक की लागत और उनके उपयोग के लिए इसकी उपलब्धता के बारे में अपनी चिंता भी दिखाई। कार्यक्रम में कुल 70 मछुआरे मौजूद थे। श्री असीम के. जाना (टीओ) और शोध विद्वान श्री स्वरूप दासगुप्ता, श्री प्रतिम चटर्जी और श्री अनुपम अधिकारी ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

“स्थिर मत्स्य पकड़ के महत्व” पर जन जागरूकता कार्यक्रम

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने 22 अक्टूबर 2024 को आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में कर्नाटक के मैसूर जिले के काबिनी जलाशय में ““स्थिर मत्स्य पकड़ के महत्व” पर एक जन जागरूकता कार्यक्रम जनजातीय उप योजना (टीएसपी) के तहत आयोजित किया

गया। काबिनी में 304 अनुसूचित जनजाति सदस्यों के साथ गिरिजनारा मीनुगरारा सहकारी संघ को एक एफआरपी नाव और एक ओबीएम इंजन सौंपा गया। कार्यक्रम में मैसूर जिले के 50 मछुआरों ने भाग लिया। आईसीएआर-सीआईएफआरआई के तकनीकी अधिकारी डॉ. विजयकुमार एम. ई. ने सभा का स्वागत किया। क्षेत्रीय केंद्र की प्रमुख डॉ. प्रीता पणिक्कर ने परिचयात्मक टिप्पणियां प्रस्तुत कीं और अन्तर्स्थलीय मछुआरों की आजीविका को बनाए रखने में जलाशय मत्स्य पालन की भूमिका पर अपनी अंतर्दृष्टि साझा की। श्री श्रीनिवास के एन, उप निदेशक; श्री महादेवा, उप निदेशक; श्री चंदन सी., उप निदेशक; और श्री शिवरंजन एच. यू., सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, कर्नाटक ने प्रतिभागियों के साथ बातचीत की। गिरिजाना मीनुगरारा सहकारी संघ, काबिनी के अध्यक्ष श्री कावेरा ने इस अवसर पर बात की और टीएसपी के तहत सोसायटी को चुनने के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई को धन्यवाद दिया। आईसीएआर-सीआईएफआरआई की वैज्ञानिक डॉ. सिबिना मोल एस. ने जिम्मेदार मछली पकड़ने के महत्व पर बात की और आईसीएआर-सीआईएफआरआई की वैज्ञानिक डॉ. सोनालीका साहू ने स्थायी मत्स्य पालन के लिए स्वच्छ जल के महत्व पर प्रकाश डाला।

उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) का सिफरी क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी का दौरा किया

आईसीएआर, नई दिल्ली के उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) डॉ. जॉयकृष्ण जेना ने 24 अक्टूबर, 2024 को आईसीएआर-सीआईएफआरआई क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी का दौरा किया। सभी कर्मचारियों ने डॉ. जेना का केंद्र में गर्मजोशी से स्वागत किया और इसके बाद केंद्र की प्रयोगशालाओं, सजावटी मछली इकाई और अन्य सुविधाओं का दौरा किया। इसके बाद उन्होंने केंद्र के सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी, प्रशासनिक और संविदा कर्मचारियों को संबोधित किया। अपनी बातचीत के दौरान उन्होंने क्षेत्र के महत्व का उल्लेख

किया और केंद्र की आउटरीच गतिविधियों को मजबूत करने और हितधारकों को अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने का सुझाव दिया। उन्होंने पूर्वोत्तर क्षेत्र में मछुआरा समुदायों के बीच आईसीएआर-सीआईएफआरआई प्रौद्योगिकियों को लोकप्रिय बनाने का भी सुझाव दिया। उन्होंने सभी कर्मचारियों को केंद्र के अनुसंधान और अन्य गतिविधियों में अधिक सक्रिय होने के लिए प्रेरित किया। उनके दौरे से कर्मचारियों को संस्थान के भविष्य में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरणा और ऊर्जा मिली है।

आईसीएआर-विश्व मछली सहयोगात्मक परियोजना की बैठक

आईसीएआर-विश्व मछली सहयोगात्मक परियोजना की बैठक (आईसीएआर-विंडो 3) संस्थान में 22 से 24 अक्टूबर, 2024 के

दौरान आयोजित की गई। डॉ. जोर्न श्मिट, सतत जलीय खाद्य प्रणाली के निदेशक, वर्ल्डफिश, मलेशिया; डॉ. अरुण पडियार, वर्ल्डफिश लीड, भारत; डॉ. सौरभ कुमार दुबे, वर्ल्डफिश; और आईसीएआर-सीआईएफआरआई के वैज्ञानिकों और विद्वानों की एक बहु-विषयक टीम ने भाग लिया। बैठक का उद्देश्य आईसीएआर-डब्ल्यू3-विश्व मछली सहयोगात्मक परियोजना के तहत किए गए कार्यों की समीक्षा करना, भविष्य के सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा करना, और अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के लिए विशिष्ट वैज्ञानिक और प्रबंधन हस्तक्षेपों का पता लगाना था। तीन दिवसीय बैठक की शुरुआत संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के स्वागत भाषण से हुई। डॉ. दास ने संस्थान के विभिन्न शोध एवं विकासात्मक गतिविधियों की सराहना की जिसमें नई शोध पहल, शोध उपलब्धियां, आउटरीच कार्यक्रम, विकसित तकनीक, और उत्पाद, उच्च प्रभाव वाले प्रकाशन और बुनियादी ढांचे के विकास पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने यह भी बताया कि संस्थान ने पिछले चरण के साथ-साथ आईसीएआर-वर्ल्डफिश सहयोग के वर्तमान चरण में कितनी अच्छी तरह काम किया है। तकनीकी चर्चा के दौरान, डॉ.

पडियार ने संस्थान के वैज्ञानिकों से उत्पादन वृद्धि के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन पर ध्यान केंद्रित करने और उभरती चुनौतियों

के संदर्भ में अनुसंधान गतिविधियों को प्राथमिकता देने के संदर्भ में तकनीकी मार्गदर्शन और प्रबंधन योजनाएं प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का आग्रह किया। दूसरे दिन, टीम द्वारा पश्चिम बंगाल के उत्तर-24-परगना के चामटा वेटलैंड में चल रही परियोजना स्थल का दौरा किया गया। एचडीपीई-पेन प्रणाली से ओमपोक पाबदा का उत्पादन डॉ. श्मिट की उपस्थिति में की गई, जिसके बाद हितधारकों के साथ बातचीत बैठक हुई। अंतिम दिन परियोजना के लिए भविष्य की कार्य योजना पर चर्चा की गई। डॉ. श्मिट और डॉ. पडियार ने वैज्ञानिकों की क्षमता निर्माण के लिए ज्ञान-साझाकरण सत्रों को शामिल करने के तरीके बताए, जिससे अंततः हितधारकों का सतत उत्थान हो सके और अन्य विकासशील देशों के लिए एक मॉडल स्थापित हो सके। बैठक के

परिणाम संस्थान को अपने शोध कार्यक्रमों को आकार देने और अनुसंधान फोकस को प्राथमिकता देने में मदद करेंगे ताकि अधिक ऊंचाइयों के लिए प्रयास किया जा सके और राष्ट्रीय लक्ष्य हासिल किए जा सकें। बैठक का समापन डॉ. दास, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

'आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के पारिस्थितिकी तंत्र आधारित प्रबंधन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

सिफरी ने 23 से 29 अक्टूबर, 2024 तक "आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के पारिस्थितिकी तंत्र आधारित प्रबंधन" पर एक व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया। पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, और मध्य प्रदेश के 21 छात्रों और 1 संकाय सदस्य सहित कुल 22 प्रतिभागियों ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया। उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कल्याणी विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय पारिस्थितिकी इंजीनियरिंग केंद्र के एमेरिटस प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) प्रो. (डॉ.) बी.बी. जाना उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथियों में कल्याणी विश्वविद्यालय के प्रो. जे.एन. भक्ता, और प्रो. सुस्मिता लाहिड़ी, वर्ल्डफिश, मलेशिया में सस्टेनेबल एक्वेटिक फूड के निदेशक डॉ. जे.ओ. श्मिट और वर्ल्डफिश लीड फॉर इंडिया डॉ. अरुण पडियार पी. शामिल थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में, आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र को समझने के महत्व पर जोर दिया और जलवायु परिवर्तन चुनौतियों से निपटने के लिए प्रकृति-आधारित समाधानों का उपयोग करके एकीकृत प्रबंधन रणनीतियों को अपनाकर बाढ़कृत आर्द्रभूमि के विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का आह्वान किया। उन्होंने आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के विशेष

संदर्भ के साथ भारत के अन्तर्स्थलीय खुले पानी के मत्स्य पालन का अवलोकन भी किया है। प्रो. (डॉ.) बी. बी. जाना ने रामसर आर्द्रभूमि की परिभाषा, आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र के लिए लागत प्रभावी प्रकृति-आधारित पारिस्थितिक इंजीनियरिंग, यूट्रोफिकेशन, उत्पादकता संकेतक, विषाक्त नीले-हरे शैवाल के मुद्दे, और आर्द्रभूमि प्रबंधन के लिए ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर के कैस्केड दृष्टिकोण पर चर्चा की। उन्होंने आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के विकास की दिशा में जमीनी स्तर पर ज्ञान प्रसार में सीआईएफआरआई के प्रयासों की भी सराहना की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं ने पारिस्थितिकी तंत्र आधारित मत्स्य पालन प्रबंधन की अवधारणा, आर्द्रभूमि की पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं, आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के विशेष संदर्भ में पारिस्थितिक स्वास्थ्य कार्ड, आर्द्रभूमि की भेद्यता, और जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में प्रजातियों के साथ इसका आकलन, भारत में आर्द्रभूमि और मत्स्य पालन को प्रभावित करने वाले मानवजनित तनाव, मत्स्य पालन के संबंध में बाढ़कृत आर्द्रभूमि की पारिस्थितिकी, आर्द्रभूमि के जलीय पर्यावरण, और आवास की विशेषताएं, बाढ़कृत आर्द्रभूमि में मत्स्य पालन का प्रबंधन-संस्कृति आधारित मत्स्य पालन (सीबीएफ) सहित मौजूदा तकनीक और आर्द्रभूमि प्रबंधन में पारिस्थितिकी तंत्र आधारित मत्स्य पालन के लिए विकास की गुंजाइश, आर्द्रभूमि में बीज उगाने और टेबल आकार की मछली उत्पादन के लिए संलग्नक कार्यप्रणाली, आर्द्रभूमि मत्स्य पालन में लघु स्वदेशी मत्स्य पालन (एसआईएफ) की भूमिका और आर्द्रभूमि मत्स्य पालन विकास में समुदाय की भागीदारी, शासन और नीतिगत मुद्दों सहित टिकाऊ आर्द्रभूमि मत्स्य पालन विकास के लिए विभिन्न हितधारकों की भूमिका। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को मछली की पहचान के लिए बुनियादी वर्गीकरण, आर्द्रभूमि के पानी और तलछट मापदंडों का आकलन, प्लवक का आकलन, बेन्थिक जीवों और मैक्रोफाइट्स से जुड़े जीवों के आकलन की पद्धति, जीआईएस और रिमोट सेंसिंग प्रयोग, सांख्यिकीय आकलन और जलीय पर्यावरण के पारिस्थितिक आकलन के लिए सॉफ्टवेयर, आर्द्रभूमि पारिस्थितिक स्वास्थ्य का संकेतक आधारित आकलन, मछली उपज क्षमता का आकलन और स्टॉकिंग रणनीतियां, ट्रॉफिक स्थिति का आकलन, आर्द्रभूमि में मछली पकड़ अनुमान विधियों पर व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के लिए संशोधित किया गया था। बेलेडांगा आर्द्रभूमि में प्रशिक्षण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में प्रशिक्षुओं के लिए एक दिवसीय क्षेत्र यात्रा का भी आयोजन किया गया।

गंगा उत्सव के अवसर पर माननीय केंद्रीय मंत्री श्री सी. आर. पाटिल द्वारा हरिद्वार में लुप्तप्राय महासीर की रैंचिंग

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने भारत सरकार के माननीय केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी. आर. पाटिल की गरिमामयी उपस्थिति में गंगा नदी में लगभग 6,000 महासीर के बच्चे छोड़े। 'राष्ट्रीय पशुपालन कार्यक्रम' के तहत 4 नवंबर, 2024 को चंडी घाट पर मछलियों को संरक्षित और पुनर्स्थापित करने के लिए छोड़ा गया था। यह कार्यक्रम 'राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन परियोजना' के तहत आयोजित किया गया था जिसका उद्देश्य गंगा नदी के हिमालयी क्षेत्र में घटती महासीर की आबादी को बढ़ाना और पुनर्स्थापित करना था। ठंडे पानी की महत्वपूर्ण मछली होने के कारण, आईसीएआर-सीआईएफआरआई को पारिस्थितिक और आजीविका उद्देश्यों के लिए मछली के संरक्षण और संवर्धन का कार्य सौंपा गया है। कार्यक्रम में श्री राजभूषण चौधरी, माननीय राज्य मंत्री, जलशक्ति मंत्रालय, भारत सरकार; श्रीमती रेखा आर्य, माननीय मंत्री, उत्तराखंड सरकार; श्री त्रिवेंद्र सिंह रावत, माननीय पूर्व मुख्यमंत्री उत्तराखंड और संसद सदस्य (एलएस), हरिद्वार; श्री राजीव कुमार मित्तल, आईएएस, महानिदेशक एनएमसीजी; डॉ. संदीप बेहरा, जैव विविधता सलाहकार एनएमसीजी; डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर; और अन्य गणमान्य व्यक्ति और धार्मिक संत उपस्थित थे।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

आईसीएआर-सीआईएफआरआई में 28 अक्टूबर-3 नवंबर, 2024 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया जिसका विषय था "राष्ट्र की समृद्धि के लिए अखंडता की संस्कृति"। सप्ताह भर चलने वाले इस आयोजन की शुरुआत 28 अक्टूबर, 2024 को आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने अधिकारियों और कर्मचारियों को शपथ दिलाकर की जबकि कई अन्य लोगों ने ई-शपथ लेकर भाग लिया। परिसर के चारों ओर कई पोस्टर, बैनर और तख्तियों ने भ्रष्टाचार के हानिकारक प्रभावों और सीआईएफआरआई की शून्य-सहिष्णुता दृष्टिकोण के प्रति प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। इसके बाद स्थानीय फेरी घाट तक पैदल यात्रा की गई जो एक व्यस्त आवागमन स्थल है जिसका उद्देश्य जन जागरूकता बढ़ाना और लोगों को भ्रष्टाचार के खिलाफ बोलने के लिए प्रोत्साहित करना था। इस कार्यक्रम ने स्थानीय लोगों काफी आकर्षित किया । 30 अक्टूबर, 2024 को संस्थान के कर्मचारियों के लिए सतर्कता विषय पर एक चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसके बाद एक तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता हुई जिसमें कर्मचारियों, छात्रों, युवा पेशेवरों और अन्य

लोगों ने भाग लिया। 1 नवंबर को आईसीएआर-सीआईएफआरआई के साथ-साथ डगलस मेमोरियल हायर सेकेंडरी स्कूल, सेंट्रल मॉडल स्कूल और पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय (बैरकपुर) के वरिष्ठ छात्रों के लिए इन्ही स्कूलों में एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। 1 नवंबर को कर्मचारियों के लिए एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी आयोजित की गयी। एक स्लोगन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें सभी कर्मचारियों ने भाग लिया और ऊपर वर्णित विषय पर आधारित हिंदी या अंग्रेजी में स्लोगन प्रस्तुत किए। श्री चंद्रशेखर मीना जी, आईआरएस, जीएसटी इंटेलिजेंस महानिदेशालय (डीजीजीआई), उप राष्ट्रीय इकाई (पूर्व) जीएसटी भवन, कोलकाता के उप निदेशक, मुख्य अतिथि थे। उन्होंने सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाने के महत्व को व्यक्त करते हुए कहा कि "जब कोई नहीं देख रहा हो तब भी सही काम करना चाहिए"। उन्होंने सीआईएफआरआई द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की और अनुसंधान गतिविधियों के दौरान प्रकृति से निपटने में सतर्कता के महत्व पर बल दिया। डॉ. डी. के. मीना (सतर्कता अधिकारी, आईसीएआर-सीआईएफआरआई) ने स्वागत भाषण दिया । श्री निर्मल सरकार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 के तहत गतिविधियों की सराहना की। डॉ. अरमान यू. मुजादद्दी, संचालन समिति के अध्यक्ष और प्रभाग प्रमुख (ओपन वाटर एक्वाकल्चर उत्पादन और प्रबंधन प्रभाग) ने वॉकथॉन, मानव श्रृंखला निर्माण, प्रभाग प्रमुख, नदी और मुहाना मत्स्य प्रभाग ने वैज्ञानिक अनुसंधान में पारदर्शिता, नैतिक मानकों और स्वतंत्र निरीक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला ताकि ईमानदारी और सार्वजनिक विश्वास सुनिश्चित किया जा सके। मुख्य अतिथि श्री चंद्रशेखर मीना द्वारा विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरित किए। प्रभारी निदेशक, डॉ. श्रीकांत सामंत ने आईसीएआर-सीआईएफआरआई में वित्तीय लेखा परीक्षा के निष्पक्ष प्रबंधन पर प्रकाश डाला। उन्होंने आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के विजेताओं को बधाई दी। कार्यक्रम में सीआईएफआरआई के सभी कर्मचारी, डगलस मेमोरियल हायर सेकेंडरी स्कूल और सेंट्रल मॉडल स्कूल, केंद्रीय विद्यालय के छात्र और ओडिशा के मछली किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का समापन वैज्ञानिक डॉ. एम. शाया देवी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

एलापुली गांव (पलक्कड़): अन्तर्स्थलीय मत्स्य विकास के लिए आवश्यकताएँ

माननीय श्री जॉर्ज कुरियन जी, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी; तथा अल्पसंख्यक मामलें के राज्य मंत्री के साथ आयोजित बैठक में आईसीएआर-सिफरी(कोच्चि केंद्र) की एक टीम ने 24 अक्टूबर 2024 को पलक्कड़ के एलापुली गांव का दौरा किया ताकि गांव में अन्तर्स्थलीय मत्स्य विकास के लिए अन्तर्स्थलीय जल निकायों की उपयुक्तता का सर्वेक्षण किया जा सके। एलापुली गांव में तालाबों, खदानों और आर्द्रभूमि जैसे कई अन्तर्स्थलीय जलीय संसाधन है। इस पंचायत को जल संरक्षण और प्रबंधन के लिए दक्षिण भारत में तीसरे सर्वश्रेष्ठ नागरिक निकाय के रूप में 2022 में राष्ट्रीय जल पुरस्कार भी मिला है। पलक्कड़ के एलापुली गांव के गांधी आश्रम में एक हितधारक बैठक आयोजित की गई। समूह चर्चा का नेतृत्व श्री. सर्वोदय केन्द्रम के निदेशक पुडुस्सेरी श्रीनिवासन, गांधी आश्रम कार्य समूह के संरक्षक डॉ. एन. शुद्धोदनन, फार्म केयर फाउंडेशन के सदस्य डॉ. पीताम्बरन, डॉ. सुरेश बाबू और श्री जोस मैथ्यूज तथा एलाप्पुल्ली ग्राम पंचायत सदस्य श्री गिरीश बाबू के. ने अपने विचार साझा किए। बैठक में मछली

पालन के लिए अप्रयुक्त तालाबों के उपयोग और उपेक्षित तालाबों के जीर्णोद्धार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। अच्छी गुणवत्ता वाले मछली के बीज और लागत प्रभावी फ़ीड की उपलब्धता पर भी जोर दिया गया और मछली हैचरी, मछली फ़ीड इकाई और एक सजावटी मत्स्य पालन कार्यक्रम विकसित करने की संभावनाओं पर भी चर्चा की गई। उन्होंने मछली पालन पर प्रशिक्षण और जल गुणवत्ता परीक्षण में कर्मियों के प्रशिक्षण का भी अनुरोध किया। इसके अलावा, उन्होंने महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों जैसे विपणन, सहायक मछली उत्पादों का उत्पादन आदि की आवश्यकता और इन क्षेत्रों में ग्रामीणों की आजीविका में सुधार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इन जल निकायों में पर्यटन के अवसरों पर भी चर्चा की गई। ग्राम पंचायत कार्यालय में पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रेवती बाबू और सचिव श्री सुनील के साथ बैठक हुई। तालाबों की मौजूदा स्थिति, जिनमें कचरा डाला जा रहा है और आर्द्रभूमि की खस्ता हालत, मुख्य चिंता का विषय रही। मछली के कचरे के निपटान के लिए बायो-कंपोस्टिंग इकाई की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया। सीआईएफआरआई की टीम ने कुछ निजी तालाबों, सार्वजनिक तालाबों और खदानों का दौरा किया। कुछ निजी और मंदिर के तालाबों में भारतीय मेजर कार्प, कॉमन कार्प और तिलापिया के साथ मछली पालन किया जाता है। बीज की गुणवत्ता, कम वृद्धि दर, और अवैज्ञानिक अभ्यास में समस्याओं के कारण उत्पादकता कम है। सीआईएफआरआई प्रौद्योगिकियों के साथ वैज्ञानिक हस्तक्षेप एलापुली गांव में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के विकास में मदद कर सकते हैं। महिलाओं की भागीदारी को प्राथमिकता देना और उद्यम में युवाओं को आकर्षित करना और बेहतर आजीविका का मार्ग प्रशस्त करने में मदद कर सकता है। आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. `बि. के. दास के मार्गदर्शन में, और डॉ. प्रीता पणिक्कर, एचओआरसी, आईसीएआर-सिफरी बैंगलोर केंद्र के सहयोग से, एलप्पुल्ली गांव का दौरा डॉ. दीपा सुधीसन (वरिष्ठ वैज्ञानिक), श्रीमती तनुजा अब्दुल्ला (वैज्ञानिक) और श्री पी. वी. शाजिल (तकनीशियन) द्वारा किया गया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- सितंबर, 2024 के दौरान सिक्किम की तीस्ता, रंगपो, रानी खोला, खानी खोला नदियों में चॉकलेट महसीर (*नियोलिसोचिलस हेक्सागोनोलेपिस*) और स्नो ट्राउट (*स्किज़ोथोरैक्स रिचर्डसोनी*) को प्रमुख पकड़ (कुल पकड़ का 80%) के रूप में दर्ज किया गया।
- चार राज्यों (अर्थात उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल) से चयनित स्थलों को कवर करते हुए गंगा नदी से सितंबर 2024 में कुल मछली की मात्रा 62.89 टन होने का अनुमान है।
- सितंबर, 2024 के दौरान गोलपारा (20-30%) और गुवाहाटी (10-20%) में ब्रह्मपुत्र नदी की पकड़ से हिल्सा (*टेनुअलोसा इलीशा*) दर्ज की गई।
- सितंबर 2024 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली की अनुमानित मात्रा 05.631 टन थी जो सितंबर 2023 में प्राप्त मछली पकड़ से 34% कम थी।

बैठकें

- आईसीएआर-सिफरी के निदेशक ने 10 अक्टूबर 2024 को प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना की तैयारी बैठक में वर्चुअली भाग लिया।

- आईसीएआर-सिफरी के वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी द्वारा आयोजित " कृषि निर्यात को बढ़ावा देने पर विचार-विमर्श कार्यशाला: संभावनाएं और चुनौतियां" नई दिल्ली में 10 अक्टूबर 2024 को ऑनलाइन भाग लिया।

- आईसीएआर-सिफरी के निदेशक और वैज्ञानिकों ने 19 अक्टूबर 2024 को मत्स्य पालन विभाग, भारत सरकार द्वारा आयोजित मत्स्य पालन और जलीय कृषि में ड्रोन प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग और प्रदर्शन पर कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने माननीय केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह और बिहार के माननीय उपमुख्यमंत्री श्री विजय कुमार सिन्हा और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में किया।

- डॉ. अभिलक्ष लिखी आईएएस, सचिव, मत्स्य विभाग, भारत सरकार ने 24 सितंबर 2024 को आईसीएआर-सिफरी का दौरा किया और मत्स्य पालन और जलीय कृषि में ड्रोन अनुप्रयोग पर राष्ट्रीय स्तर की बैठक का उद्घाटन किया। विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों, मत्स्य पालन संस्थानों, कॉलेजों, सहकारी समितियों, एफएफपीओ, स्टार्टअप्स, उद्यमियों और अन्य हितधारकों से 1,000 प्रतिभागियों ने हाइब्रिड मोड में कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

प्रशिक्षण

- आईसीएआर-सिफरी ने 18 से 24 सितंबर, 2024 के दौरान सीवान, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर डीओएफ, बिहार प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें सीवान जिले, बिहार के 30 मछली किसानों ने भाग लिया।

- आईसीएआर-सिफरी ने 25 से 27 सितंबर 2024 के दौरान शांतिनिकेतन, बीरभूम, पश्चिम बंगाल के आदिवासी मछुआरों के लिए "आय सृजन के लिए सजावटी मछली पालन" पर एसटीसी प्रायोजित 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले के शांतिनिकेतन के 24 आदिवासी मछुआरों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

- आईसीएआर-सिफरी ने 26 सितंबर से 02 सितंबर, 2024 के दौरान पटना, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर डीओएफ, बिहार प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें पटना जिले, बिहार के 30 मछली किसानों ने भाग लिया।

- आईसीएआर-सिफरी में टीयू डेल्फ़्ट, नीदरलैंड; और एनआईटी, कालीकट के सहयोग से 21-26 अक्टूबर 2024 तक "नदी पारिस्थितिकी तंत्र में खाद्य-ऊर्जा-जल संबंध" पर फील्ड स्कूल का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 15 प्रतिभागी थे।

- आईसीएआर-सिफरी में 23-29 अक्टूबर 2024 तक "आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के पारिस्थितिकी तंत्र आधारित प्रबंधन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 22 प्रशिक्षु (12 महिला प्रतिभागियों सहित) भाग लिया।

- आईसीएआर-सिफरी ने 14 अक्टूबर 2024 को सीओएफ, डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, ढोली, समस्तीपुर, बिहार के 36 बी.एफ.एससी. छात्रों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जिसमें उन्हें विभिन्न मत्स्य प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया और सजावटी इकाई, हैचरी इकाई और बायोफ्लोक इकाई जैसी विभिन्न सुविधाओं के साथ-साथ संस्थान की प्रयोगशालाओं से भी अवगत कराया गया।

- आईसीएआर-सिफरी, क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने 30 सितंबर 2024 को मछुआरों के बीच सतत मत्स्य प्रबंधन पर जागरूकता पैदा करने के लिए एक फील्ड डे आयोजित किया। इस अवसर पर कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले के गायत्री जलाशय में 50,000 लेबियो रोहिता फिंगरलिंग्स का स्टॉक किया गया और एससी-एसपी कार्यक्रम के तहत 20 मछुआरों को टोकरे वितरित किए गए। फील्ड डे में लगभग 50 मछुआरों ने भाग लिया।

- आईसीएआर-सिफरी ने 3 अक्टूबर 2024 को पूर्वी कोलकाता वेटलैंड के चरचरिया वेटलैंड में मछली रोग प्रबंधन और फ़ीड अनुप्रयोग में ड्रोन तकनीक की क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए एक प्रदर्शन सह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें 70 से अधिक मछुआरों ने भाग लिया।

- आईसीएआर-सिफरी ने असम सरकार के मत्स्य विभाग के सहयोग से टीएसपी के तहत आदिवासी मछली किसानों के लाभ के लिए 4 अक्टूबर 2024 को बोको, कामरूप (आर) में एक जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम आयोजित

किया। कार्यक्रम में 60 प्रतिभागियों (22 मछुआरे, मछली किसान और मत्स्य अधिकारी सहित) ने भाग लिया।

अन्य

- सुश्री प्रियंका बसु इंग्टी, आईएएस, सचिव, मत्स्य विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार ने 3 अक्टूबर 2024 को आईसीएआर-सिफरी का दौरा किया और हिमाचल प्रदेश मत्स्य पालन के साथ सहयोग पर निदेशक और वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की।
- डॉ. जोर्न ओ. श्मिट, निदेशक, सतत जलीय खाद्य, विश्व मछली मलेशिया और डॉ. अरुण पडियार पी., लीड इंडिया ने 22-24 अक्टूबर 2024 तक आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर का दौरा किया और निदेशक एवं वैज्ञानिकों के साथ द्विपक्षीय आईसीएआर-सीजीआईएआर विंडो 3 के तहत आईसीएआर-विश्व मछली सहयोगी परियोजना की गतिविधियों और उपलब्धियों और कार्य योजना पर चर्चा की।
- माननीय केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह; बिहार के माननीय उपमुख्यमंत्री श्री विजय कुमार सिन्हा; एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ 19 अक्टूबर 2024 को ज्ञान भवन, पटना में मत्स्य पालन विभाग के सहयोग से आईसीएआर-सिफरी द्वारा आयोजित ड्रोन प्रदर्शन में भाग लिया।
- महात्मा गांधी की 155वीं जयंती पर निदेशक, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने 2 अक्टूबर 2024 को बापू को श्रद्धांजलि अर्पित की। 2-31 अक्टूबर 2024 तक स्वच्छता ही सेवा विशेष अभियान 4.0 का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों द्वारा स्वच्छता की शपथ भी ली गई तथा गंगा घाट की सफाई की गई।

इनपुट वितरण सह जागरूकता कार्यक्रम

- आईसीएआर-सिफरी ने 25 सितंबर, 2024 को आदिवासी महिला मछली किसानों से युक्त 22 महिला एसएचजी के लिए पश्चिम बंगाल के पुरुलिया के मान बाजार में एक इनपुट वितरण सह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।
- जनजातीय उप योजना (टीएसपी) के तहत 22 अक्टूबर 2024 को कर्नाटक के मैसूर जिले के काबिनी जलाशय में "स्थायी मछली पकड़ने के महत्व" पर एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मैसूर जिले के 50 मछुआरों ने भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 5 अक्टूबर, 2024 को 100 एससी/एसटी महिला मछली पालकों के लिए कुलतली, सुंदरबन में एक इनपुट वितरण सह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 7 अक्टूबर, 2024 को आदिवासी मछली पालकों के लिए पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले के शांतिनिकेतन, बोलपुर में सजावटी मछली पालन पर एक इनपुट वितरण सह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

अन्य कार्यक्रम

- फरक्का अपस्ट्रीम में कुल 1102 हिल्सा मछलियों का पालन किया गया और प्रवासी पथ को समझने के लिए 117 को टैग किया गया। पालन के दौरान हिल्सा का रिकॉर्ड किया गया वजन 40.2 ग्राम (न्यूनतम) से 375 ग्राम (अधिकतम) देखा गया।
- आईसीएआर-सिफरी , बैरकपुर ने 'राष्ट्रीय पशुपालन मिशन-III' के तहत एक नदी पशुपालन कार्यक्रम आयोजित किया और भारतीय मेजर कार्प्स के 50,000 फिंगरलिंग जारी किए।
- आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर; एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली मेसर्स एम.आर. एक्वाटेक, भुवनेश्वर ने 24 सितंबर 2024 को पांच साल की अवधि के लिए सीआईएफआरआई पेन एचडीपीई प्रौद्योगिकी के गैर-अनन्य लाइसेंस समझौते पर हस्ताक्षर किए।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न